सीताराम झा

जन्म : 16 जनवरी 1891 ई०।

मृत्यु : 15 जून 1975 ई०।

जन्म-स्थान : चौगामा, (बहेरा), दरभंगा।

कृति : **मैथिली** : 'अम्बचरित', (महाकाव्य), 'सूक्ति सुधा', 'लोक लक्षण', 'अलंकार दर्पण', 'अतिचार निर्णय', 'पहुआ चरित', 'उनटा-बसात', 'उपदेशाक्षमाला', 'गीता तत्त्व सुधा', 'पर्व-निर्णय', 'परिचय-दर्पण', 'भूकम्प वर्णन', 'मैथिली काव्य षटरस', 'मैथिली काव्योपवन', 'रत्न संग्रह', आदि।

संस्कृत : ज्योतिष शास्त्रसँ सम्बन्धित पचहत्तरिसँ बेसी पोथी प्रकाशित।

ज्योतिष शास्त्रक प्रकाण्ड विद्वान कविवर सीताराम झाक कर्म भूमि छलनि-काशी। मैथिली आ संस्कृतमे हिनका समान अधिकार छलनि। तेँ 16 गोट मैथिलीमे आ पचहत्तरक करीब संस्कृतमे, खासकऽ ज्योतिषशास्त्रसँ सम्बद्ध हिनक रचना उपलब्ध अछि। मैथिलीकेँ आगू बढ़यबाक संगहि लोकप्रिय बनयबामे हिनक स्थान अविस्मरणीय अछि। म०म०मुरलीधर झा आ जीवन झाक रचना हिनक सृजनात्मक प्रवृत्तिकेँ अनुप्राणित कयलक। 'मिथिला मोद'क सम्पादन 1920ई० सँ 1927 ई० धरि कयलनि। प्रो० रमानाथ बाबू हिनका आशु कवि कहलनि अछि किएक तँ हिनका गद्यक रचना सेहो काव्यमय बुझाइत अछि। हिनक कवितामे मिथिलाक माटि-पानि, संस्कृति, ठेंठ मैथिलीक ठाठक सुगन्ध भेटैत अछि।

काव्य-संदर्भ : प्रस्तुत कविता 'सूक्ति-सुधा'मे कवि जीवनक नैतिक ओ मानवीय मूल्यकेँ प्रश्रय देलनि अछि। जँ मनुक्ख हिनका द्वारा प्रस्तुत सूत्र वाक्यक अनुकरण करय तँ ओकर जीवन सार्थक भऽ जेतैक।

सूक्ति सुधा

विद्यासँ धन ताहिसँ धर्म, धर्मसँ शान्ति ।
ताहिसँ सुख, सद्‌बुद्धि पुनि, हँटय हृदयसँ भ्रान्ति ॥
हटय हृदयसँ भ्रांति, प्राप्ति आनन्द स्वरूपक ।
अनायास कटि जाय सकल बन्धन भवकूपक ॥
तेँ सभ शास्त्र-पुराण वेद-वाणी अछि हृद्या ।
सभ तजि पहिने करी उपार्जन जनहित विद्या ॥
जानय सभ जन भनय पुनि आगम-निगम पुरान ।
जन्मभूमि जननी-गिरा-सुरपुर सुधा समान ॥
सुरपुर सुधा समान जनक जनपद-जनवाणी ।
छथि बुझैत तत्त्वज्ञ सकल भाषा विज्ञानी ॥
तेँ मिथिलाक समाज अपन करतब ई मानय ।
निज भाषाक महत्व सदा सौरभकेँ जानय ॥
कहने छथि फल विज्ञ जन उत्तम एक विवाह ।
दोसर मध्यम हेतु वश, तेसर अति अधलाह ॥
तेसर अति अधलाह, जानि चारिम पुनि कयली ।
अथवा नूतन दास संग कानन पथ धयली ॥
नहि तँ दशरथ भूप कुफल पौलनि घर रहने ।
देखू केकयिक कथा आदि कवि जन छथि कहने ॥
देशक गौरव जाहिसँ बढ़य करी से काज ।

युक्त वचन बाजी जकर आदर करय समाज ॥
आदर करय समाज जकर से रीति बनाबी ।
तजी अनवसर क्रोध लोभ नहि कतहु जनाबी ॥
पयर धरी तहिं ठाम जतय नहि भय ठेसक ।
पहिने अपने सुधरि बनी पुनि पर उपदेशक ॥
गही सत्यपथ सर्वदा रही बनल नित ढीठ ।
जहि दिस जखन बसात हो करी ताहि दिस पीठ ॥
करी ताहि दिस पीठ जतय निन्दक वंचक हो ।
तजी सभा यदि पक्षपात मुखिया पंचक हो ॥
मानी शब्दक युक्त अर्थ नहि बनी आग्रही ।
भाषा कोनो होय विदेशी-देशी-मगही ॥

●

शब्दार्थ — भ्रान्ति = संदेह; अनायास = बिना परिश्रमकेँ; भवकूप = सांसारिक मायाजाल; आगम-निगम = वेदादि मान्य ग्रंथ; सुरपुर = स्वर्ग; भूप = राजा; तत्त्वज्ञ = ब्रह्मकेँ जानयवला, दार्शनिक ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. 'सूक्ति-सुधा'क आधार पर विद्याक महिमा लिखू ।
2. बहु विवाहक प्रति कविक धारणासँ अवगत कराऊ ।
3. जननी आओर जन्मभूमिक संदर्भमे कविक की उक्ति छनि ?
4. दशरथ के छलाह ? कवि कोन सन्दर्भमे हुनका उद्धृत कयने छथि ?
5. पैर कतय रखबाक चाही ?
6. कोन पथ पर चलबाक चाही ?

गतिविधि :

रिक्त स्थानक पूर्ति करू –

1. जननी जन्म भूमिश्च ..... ।

2. विद्या ददाति विनयम् विनयाद्याति पात्रताम् ।

   पात्रत्वात् ..... सुखम् ।

3. 'पहिने अपने सुधरि बनी पुनि पर उपदेशक'- एहिसँ मिलैत-जुलैत उक्ति कोन महापुरुषक छनि ।

4. निम्नलिखित शब्दक अर्थ शब्दकोषमेसँ ताकिकेँ लिखू ।

   सुधा, निज, पथ, कुफल, वंचक, विज्ञ,

5. समाजमे आदर हो छात्र अपनाकेँ तद्योग आचरण करबाक चेष्टा करथि।

6. तत्सम ओ तद्भव शब्दक परिभाषा कंठस्थ करैत पाठमे आयल दस तत्सम ओ दस तद्भव शब्दक सूची बनाऊ एवं वाक्यमे प्रयोग करू ।

निर्देश :

(क) शिक्षक छात्रक गतिविधिमे सहयोग करताह। संस्कृत श्लोक पूर्ण करबामे छात्रकेँ मदद करथि तथा ओकर अर्थसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि ।

(ख) शिक्षक रामायणक आधार पर राजा दशरथक कथा वर्गमे छात्रसँ कहथि।

(ग) छात्रकेँ विभिन्न नैतिक मूल्य, यथा- अनुशासन, त्याग, क्षमाशीलता, ईमानदारी, श्रमनिष्ठा आदिसँ परिचित करबैत व्यावहारिक जीवनमे ओकर प्रासंगिकता पर प्रकाश देल जयबाक प्रयोजन अछि ।

(घ) छात्र लोकनि द्वारा चारू वेद, उपनिषद्, पुराणादि, रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथक सूची बनबाओल जाय एवं ओहि प्रसंग किछु आधारभूत ज्ञान देल जाय ।

(ङ) प्रस्तुत पाठ छात्र लोकनिक नैतिक उत्थानक दिशा-निर्देश करबामे कतेक दूर धरि सफल भेल अछि । छात्र लोकनिक ज्ञान विस्तार शिक्षक करथि ।

□